By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-4

Topic – Approaches to the study of comparative politics

class – B.A. Degree-III (Hons. P-VIII D)

Subject – Political Science

Date – 20 August, 2020

By Rahulkumar Jha

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोण:

(2) आधुनिक उपागम :– परंपरागत उपागम की कमियों को देखते हुए आधुनिक उपागमों का विकास किया गया क्योंकि बदलती परिस्थितियों का अध्ययन करने में परंपरागत उपागम उपयुक्त साबित नहीं हो रहे थे। अतः नई राजनीतिक व्यवस्थाओं, प्रक्रियाओं तथा संस्थाओं की वास्तविकताओं को समझने के लिए नई-नई खोज शुरू की गई।

इस दिशा में विशेष रूप से कार्य द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद

हुआ, जब विश्व पटल पर एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देश अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने लगे। इन देशों की विशेषता यह थी कि इन देशों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ पश्चिमी समाज के देशों से अलग थी। अतः वे विधि विधियां (परंपरागत) इन बदली हुई परिस्थितियों में सही साबित नहीं हो सकी जिस कारण विचारकों का ध्यान नए उपागमों की ओर गया।

इस संबंध में एक राजनीतिक व्यवस्था नामक नवीन अवधारणा का विकास हुआ, जो निवेश-निर्गत विश्लेषण की पद्धति पर आधारित है तथा उनके कार्यों को समझने के लिए एक और उपागम जिसे संरचनात्मक-कार्यात्मक विश्लेषण के नाम से जाना जाता है, का विकास किया गया।

आधुनिक उपागमों की विशेषताएँ :—

(i) विश्लेषणात्मक अध्ययन :— आधुनिक विद्वानों ने विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को अपनाया है। वे औपचारिक संस्थाओं के सामान्य वर्णन से संतुष्ट नहीं थे क्योंकि वे राजनीतिक वास्तविकताओं को समझना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने व्यक्ति व संस्थाओं के वास्तविक व्यवहार को समझने के लिए अनौपचारिक संरचनाओं, राजनीतिक प्रक्रियाओं व व्यवहारों के विश्लेषण पर बल दिया। इस पद्धति के द्वारा सिर्फ तथ्य ही नहीं तथ्य और मूल्य दोनों पर जोर दिया जाने लगा।

- ईस्टन, आमंड, डहल तथा वेबर आदि विद्वानों ने व्यक्ति के कार्यों पर व उनके व्यवहार पर अधिक बल दिया क्योंकि इनके विश्लेषण से राजनीतिक व्यवस्था को समझना संभव था।

CHAPTER CONTINUES...